International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-2629X, (Print), E- ISSN 2320-5466, Issued- 8,VOL- I August, 2013

शोध पत्र- हिन्दी

भवानी प्रसाद मिश्र का प्रकृति प्रेम

* अनिता देवी

* सहप्राध्यापक राजकीय महाविद्यालय जीन्द

मनुष्य शुरू से ही प्रकृति प्रेमी रहा है। प्रकृति उसकी सहचरी रही हैं, उसके बिना वह जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता। एक चित्रकार, साहित्यकार प्रकृति के विभिन्न रूपों को अपनी रचना में अनायास ही प्रस्तुत कर देता है। कभी आलम्बन रूप में, कभी एक चित्रकार, साहित्याकार प्रकृति के विभिन्न रूपों को अपनी रचना में अनायास ही प्रस्तुत कर देता है। कभी आलम्बन रूप में, कभी उद्दीपन रूप में, कभी मानवीकरण करके तो कभी वियोग रूप में प्रकृति का सहयोग अपनी रचना हेतु लेता रहा है। भवानी प्रसाद मिश्र भी इस आसक्ति से अपने आप को अलग नहीं कर पाए है और अपनी कविताओं में प्रकृति के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत किया है।

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ भले ही साधारण भाशा में लिखी गई हो किन्तु फिर भी वे असाधारण प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम हैं। कवि के अनुसार आज स्थिति ऐसी है कि हर जगह अविश्वास का माहौल, हैं, स्वरों में आशा की जगह अवसाद हैं। फलस्वरूप लोग सहजता को भूलकर असहज हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में प्रकृति के साहचर्य से रोम–रोम पुलकित हो उठता है और ऐसा महसूस होता है कि किसी मोड़ पर अचानक प्रेयसी मिल गई हो, उस श्रण ही अनुभूति सिर्फ महसूस की जा सकती है।

मिश्र जी की कविताओं में प्रकृति को खोजना नही पड़ता। वे विचार से विचार दर्शन से दर्शन सुख से सुख दुख से दुख और अपनी शब्द यात्रा को ऐन्द्रिक बनाने के फेर में नही पड़ते। वे प्रकृति के बीच आसानी से रहते हैं और उसे अपनी सहचरी बनाते है। 'सतपुड़ा के जगंल' कविता में उनका खुलापन, सादापन और हल्फापन अनायास ही देखा जा सकता है।

lriqMk d ?ku txy
uhn e Mc g, l
Å?kr vueu txyA
bu ouk e [kc Hkhrj
pkj exl pkj rhrj
tcfd gkyh ikl vkrh]
ljlkjrh ?kkl xkrh]
vkj eg, l yidrh
xqt mBr <ky bud

xhr bud cky budA

भवानी जी की रचनाओं में कई स्थानों पर प्रकृति और प्रेम एक–दूसरे के पूरक रूप में उभरे है। प्रेम के अभाव में प्रकृति भी विरस हो जाती है। मिश्र जी की कविताओं का आकलन करते हुए एक प्रश्न अनायास ही मन में उठता है कि क्या प्रकृति और स्त्री के बिना कोई कविता पूर्ण नही होती। यह प्रश्न शायद जीवन के स्वरूप पर व्यापक रूप से महत्वपूर्ण हो। जो भी हो, मिश्र जी प्रकृति का पग–पग पर विनियोग करते हैं। जिंदगी की हर एक छोटी–बड़ी बातों को रखने के लिए प्रकृति का कमनीय होना मिश्र जी की कविताओं में सर्वत्र देखा जा सकता है। वे अपने अनुभवों और कथनों को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए प्रकृति का वरण करते है।

pknuh l rj&crj og jkr
ou d o{k
o{kk ij lVh cBh gb
>dkjorh f>fYy;k
lc ;kn g
fQj u mruk l[k
uk bruk n[k fey
Qfj;kn gA

मिश्र जी ने जीवनमूल्यों के स्वरूपों एंव आयामों की बहुरंगी प्रकृति को देखने–परखने के लिए न केवल भारतीय अपितु विश्व वाड्मय के संपर्क में आने का प्रयत्न किया और उन्हे मानदण्ड बनाकर भारतीय परिप्रेक्ष्य में साहित्य की प्रभावकारी विधाओं के फलक पर उतारा। उनका विश्वास था कि मानवीय सत्य एंव जीवन मूल्य किसी देश, जाति, सम्प्रदाय या धर्म विशेष के ही नही अपितु सम्पूर्ण मानव–चेतना के लिए श्रेयस्कर होते है। परिस्थिति एंव परिवेश के अनुसार उनके प्रायोगिक स्वरूपों में अन्तर अवश्य आता हैं, पर वे समग्र काल एंव देश में मानवता के उद्धारक होते हैं। मानवीय मूल्यों की सत्ता में भूत, भविष्य का भेद नही होता। मिश्र जी की प्रकृति–चेतना अलग–अलग नही हैं। वे शब्द, धरती, मनुष्य और प्रेम सबको प्रकृति की भाषा में सुनते और गाते हैं। यहां तक कि जब भी वे अपनी और अपने समर्थ की छोटी बड़ी समस्या से निजात पाना चाहते हैं तो प्रकृति उन्हे शब्द प्रदान करती हैं, निरर्थकता की निराशा को दूर का आशा और विश्वास

के प्रातः कालीन सूर्य का दर्शन करती है। उनकी 'दुसरा सप्तक' में प्रकाशित बड़ी कविता 'सतपुड़ा के घने 'जंगल' ही पर्याप्त है। यह कविता शुद्ध रूप से प्रकृति की कविता है।

^^vtxjk e Hkj txy
vxe] xfr l ij txy
lkr&lkr igkM oky
cM&NkV >kM oky
di l dudu txy
Å?kr vuey txyA**

यह एक लंबी कविता है। प्रकृति और सुंदरता के साथ–साथ मार्मिकता, उत्सवधर्मिता और जीवंतता के अविकल अनुवार को मिश्र जी की कविताएँ प्रयोग वादी दौर में भी बाल्मीकि, कालिदास जैसे बड़े कवियों की याद दिलाती है। इनकी प्रकृति–चेतना से पूर्ण कविताओं में इस और बिंब का आस्वाद स्मरणीय सराहनीय है। चेतना की अभिव्यक्ति समग्र होती है। ऐसा नहीं कि विभाजित रूप से चेतना कविता में छनद हो। प्रकृति के तत्वों को ग्रहण करते समय अपनी चेतना की समग्रता का नवसृजन कितने संपूर्ण ढ़ग से किया है। स्पष्ट है कि समर्थ कवितयों की वाणी इस संपूर्णता को उजागर करती है। भवानीप्रसाद मिश्र भी इस कोटि के कलाकार हैं। वे प्रकृति को रचते नहीं, प्रकृति उनके भीतर से पुनर्रचित हो, उनकी निर्मल संवेदना से मज्जित हो, झर–झर फूलो सी झरती है।

^^'kCn >jr g VikVi Qy l
vFk cu tkr gekjh Hky lA**

एंकात का निवेदन करती एक प्रसिद्ध कविता में वे लिखते है।

^^Qy yk;k g dey d
D;k d: budk
ilkj vki vkpy
NkM n
gk tk, th gYdk
fdUr gkxk D;k
dey e Qy dk
dN ugh gkrk
fdlh dh HkyA**

यहाँ निवेदन के लिए कमल, मानसरोवर, मानस की गहराई, प्रेम की स्वीकृति की दिशा में संभावित हदय–कमल की प्रफुल्लता आदि बिंब–प्रतिबंब प्राकृतिक चेतना का एक साथ निर्वचन उनके प्रकृति परक–काव्य–विवके को सराहनीय रूप से प्रस्तुत करता है। मिश्र जी प्रकृति को अपने हदय से जोड़े रहते हैं, प्रकृति में ही वे अपनी काव्यभाषा की सजंनात्मक पहचान करते हैं। प्रकृति से रिश्ता रखना मनुष्य का आदिय स्वभाव है। वह प्रकृति की खेती करता है। प्रकृति को बनाता बिगाड़ता है। उसे कहीं अपने से अलग करता है या कही उससे स्वय जुड़ता है। कुल मिलाकर प्रकृति उसके जेहन से विचरण करने वाली अपरिहार्य वास्तविकता है। यही कारण है कि सदा से कविताएं प्रकृति के परिप्रेदय में प्रकृति की भाषा और प्रकृति के संदर्भ में लिखी जाती रही है। भवानीप्रसाद मिश्र जी की कविताएँ छायावाद की कल्पना और प्रगतिशील काव्य की लोकचेतना दोनों को ही एकीकृत मुहावरें में प्रकट करती है।

nh d QV vkt l;kj d ikuh cjlk jhA
gfj;kyh Nk xb gekj lkou ljlk jhA
cknyh vkb vkleku l /kjrh Qyh jhA
fct yh pedh Hkkx l[kh jh] nknj ckyx jhA

पी के प्यार फूटने और पानी के बरसने का बिंब प्रकृति का अनुभूतियों के साथ बिंब–प्रतिबंब भाव मिश्र जी की इनका पंक्तियों को छायावाद की परम्परा में कुछ जोड़ने वाला महाकवि बना देता है। भाषा और कथन शैली की परंपरित स्मृति में लोक, यथार्थ और किंचित् अधिक एंद्रियता उन्हें कवियों की श्रेणी में भिन्न ढ़ग से सम्मान देती है। इसी प्रकार प्रकृति–वर्णन के प्रसंग में ही मिश्र जी की बिंब–योजना का एक दूसरा उदाहरण देखा जा सकता है। प्रकृति और प्रिय की एकता का एकांत मिलन इन पंक्तियों में लक्षित किया जा सकता है। मिश्र जी बढ़ते ध्वनि प्रदूषण से भी क्षुबध हैं, इसलिए उनका स्वर कहीं–कहीं विशेष व्यग्यात्मक हो उठता है।

^^uxkM ukp vkj jkr
dc l ugh lqu n[k
n[kuk lquuk gk rk dgk tk,\
vc dgk g\
txy e exyA

मिश्र जी की रचनाओं की कविता और प्रकृति में द्वंद्वात्मक संबंध हैं, वे प्रकृति के सहारे कविता तक पहुँचते हैं, और कविता के साथ प्रकृति तक मिश्र जी भी अन्य कवियों के समान प्रकृति का विनियोग अपनी संवेदना की अभिव्यक्ति के लिए करते है। प्राचीन विभाजन के अनुसार आलंबन और उद्दीपन दोनों रूपों में प्रकृति को काव्य का विषय बनाया जाता है। भवानी प्रसाद मिश्र ने अपने काव्य में इन दोनों रूपों का वर्णन बखूबी दिखाया है। उनके काव्य को पढ़कर यह निष्कर्ष निकालना उचित होगा कि प्रकृति मिश्र जी की चिर–सहचरी रही है।